



(<http://shubh-yatra.in/a-dancers-diary/>)

A Dancer's Diary (<http://shubh-yatra.in/a-dancers-diary/>)



Admin (<Http://Shubh-Yatra.In/Author/Admin/>)

Apr 4, 2016, Art & Culture (<http://shubh-yatra.in/category/art-culture/>)

213 Views

Share on Facebook

Tweet on Twitter

नृत्यांगना की डायरी

When cancer hit Ananda Shankar Jayant, she refused to give in to the 'melodrama.' Instead, she carried on with her dancing. Team Shubh Yatra salutes her courage.

आनंदा शंकर जयंत जब कैंसर से पीड़ित हुईं तब उन्होंने अपनी बीमारी को 'मेलोड्रामा' नहीं बनाया। अपितु उन्होंने अपने जुनून नृत्य को जारी रखा। शुभ यात्रा की टीम उनके अदम्य साहस को सलाम करती है।

Anyone who knows Ananda Shankar Jayant will call her a power woman. However, it is her humility that shines through as she dismisses the idea with her ready smile and says, "I have miles to go before I can be called one."

A Padma Shri recipient, renowned classical dancer and choreographer, and the first woman officer to join the Indian Railway Traffic Services in South Central Railway, Shankar Jayant's relationship with dance began at the early age of 4. By 17, she had begun teaching dance in Hyderabad. "Guiding aspirants at my dance institute in Chennai, Shankarananda Kalakshetra, rejuvenates me," she says. But dance has a bigger role to play in her life. When Shankar Jayant was diagnosed with breast cancer, it was the strength, courage and determination she drew from dance that gave

her the will to fight it. She continued to dance, teach, choreograph, travel and perform on tour, even as her treatment continued. "I conducted and presented a five-day dance festival at Sangeet Natak Akademi within three weeks of my surgery," she says. "I had decided to tune out of cancer and into dance. My biggest advice to others is to resist giving in to the melodrama," she stresses.

The artiste now balances her dance practice with a career in the Railways, infusing it with the harmony, aesthetics and egalitarianism that characterise the art world. "I balance office with early-morning dance rehearsals, and travel on weekends to perform. Nothing can keep me away from dance," she says. Along with being a Bharatanatyam and Kuchipudi dancer, she has also emerged as a sought-after motivational speaker. "Dance to me is both a spiritual journey and a tool for communication," she says.

The grit displayed by her in the face of one of the medical world's worst adversities makes her a clear winner. If she's not a power woman, we don't know who is!

KNOW WHO IS:

कोई भी व्यक्ति आनंदा शंकर जयंत को जानता है वह उन्हें सशक्त महिला ही कहेंगे। यद्यपि यह उनकी विनम्रता है जो उनकी मनमोहक मुसकान से झलकती है और वह सहज भाव से कहती हैं, “इस खिताब की अभिलाषा करने से पहले मुझे अभी काफ़ी लंबा सफ़र तय करना है।”

पद्म श्री से सम्मानित, विख्यात शास्त्रीय नृत्यांगना एवं कोरियोग्राफ़र तथा दक्षिण मध्य रेलवे में भारतीय रेल यातायात सेवा की पहली महिला अधिकारी आनंदा ने चार साल की छोटी उम्र से ही नृत्य सीखना आरंभ कर दिया था। १७ साल की उम्र में तो उन्होंने हैदराबाद में नृत्य सिखाना आरंभ भी कर दिया था। उन्होंने कहा, “अपनी नृत्य संस्था शंकरानंदा कलाक्षेत्र में युवा प्रशिक्षकों को नृत्य सिखाने में मुझे बहुत आनंद की प्राप्ति होती है।” किंतु नृत्य ने उनके जीवन में अहम् भूमिका निभाई है। जब उन्हें पता चला कि वह ब्रेस्ट कैंसर से पीड़ित हैं तो आनंदा को नृत्य से प्राप्त शक्ति, प्रतिबद्धता एवं फोकस करने जैसी विशेषताएं कैंसर से संघर्ष में सहायक साबित हुईं। आनंदा ने नृत्य करना, सिखाना, कोरियोग्राफ़ी, धूमना एवं दूर पफ़ॉर्म करना जारी रखा था। इस संबंध में उन्होंने बताया, “अपनी सर्जरी के तीन सप्ताह के भीतर मैंने संगीत नाटक अकादमी में पांच दिवसीय राष्ट्रीय नृत्य महोत्सव का आयोजन एवं प्रस्तुत किया था। “मैंने उस समय यही किया कि कैंसर से उबरकर मैं नृत्य पर ध्यान देने लगी। अन्य कैंसर पीड़ितों को मेरी एक उचित सलाह यह है कि वे इस बीमारी का डटकर मुकाबला करें। इसे मेलोड्रामा न बनाएं,” उन्होंने ज़ोर देकर कहा।

वर्तमान में वह अपने नृत्य अभ्यास एवं रेलवे के करियर में सफलतापूर्वक संतुलन बना पा रही हैं तथा कला जगत में सद्भाव, सौंदर्यशास्त्र एवं समतावाद की भावना का उचित प्रकार से प्रसार भी कर रही है। उन्होंने बताया, “मैं अपने कार्यालय के समय से तालमेल बिठाकर सवेरे जल्दी रिहर्सल कर लेती हूँ और पफ़ॉर्मैस के लिए सप्ताहांत में यात्राएं भी कर लेती हूँ। नृत्य से मुझे कोई दूर नहीं कर सकता।” भरतनाट्यम एवं कुचिपुड़ी नृत्य में पारंगत होने के साथ-साथ आनंदा एक प्रेरक वक्ता भी बन गई हैं। वह बताती हैं, “नृत्य मेरी आध्यात्मिक यात्रा एवं अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है।”

वर्तमान में वह अपने नृत्य अभ्यास एवं रेलवे के करियर में सफलतापूर्वक संतुलन बना पा रही हैं तथा कला जगत में सद्भाव, सौंदर्यशास्त्र एवं समतावाद की भावना का उचित प्रकार से प्रसार भी कर रही है। उन्होंने बताया, “मैं अपने कार्यालय के समय से तालमेल बिठाकर सवेरे जल्दी रिहर्सल कर लेती हूँ और पफ़ॉर्मैस के लिए सप्ताहांत में यात्राएं भी कर लेती हूँ। नृत्य से मुझे कोई दूर नहीं कर सकता।” भरतनाट्यम एवं कुचिपुड़ी नृत्य में पारंगत होने के साथ-साथ आनंदा एक प्रेरक वक्ता भी बन गई हैं। वह बताती हैं, “नृत्य मेरी आध्यात्मिक यात्रा एवं अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है।”

चिकित्सा के क्षेत्र की सबसे पीड़ादायक बीमारी के समय उनके मुखमंडल पर धैर्य के भाव दिखाने के कारण वह विजेता सिद्ध हुईं। इस परिस्थिति में अगर वह सशक्त महिला नहीं हैं तो और कौन होगा!

“Dance to me is both a spiritual journey and a tool of communication”

 Tags Classical Dance (http://shubh-yatra.in/tag/classical-dance/)	 Comments No comment (http://shubh-yatra.in/a-dancers-diary/#respond)
 Category Art & Culture (http://shubh-yatra.in/category/art-culture/)	 Date Apr 4, 2016

[Previous Article \(http://shubh-yatra.in/weave-in-india/\)](http://shubh-yatra.in/weave-in-india/) [Next Article \(http://shubh-yatra.in/april-2016-issue/\)](http://shubh-yatra.in/april-2016-issue/)

Leave a Reply

<input type="text" value="Comment"/>	<input type="text" value="Name"/>
	<input type="text" value="Email"/>
	<input type="text" value="Website url"/>